पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों में स्त्री–शिक्षा के विकास का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. मन्जू कठैत*

सारांश

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख साधन माना जाता गया है। स्त्री–शिक्षा के अभाव में यह परिवर्तन अधूरा है और स्त्री–शिक्षा की स्थिति का आंकलन कर इसका विस्तार व विकास सम्भव हो सकता हैं। वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन विधि पर आधारित, गढ़वाल मण्डल के पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों की स्त्री–शिक्षा के विकास के संदर्भ में, इस शोध के अध्ययन क्षेत्र जनपद चमोली एवं जनपद देहरादून से दो–दो विकासखण्डों का चयन लॉटरी विधि से तथा स्त्री–शिक्षा से संबंधित माध्यमिक विद्यालयों का चयन समानुपातिक स्तरीकृत निदर्शन प्रविधि से किया गया है। न्यादर्श के रूप में प्रधानाध्यापकों से साक्षात्कार–अनुसूची का प्रयोग कर सूचनाएं प्राप्त की गयी हैं। गढ़वाल मण्डल के मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या तथा अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की संख्या पर्याप्त नहीं है जबकि विद्यालयों में उच्च शैक्षिक वातावरण बनाने हेतु छात्राओं एवं शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए। पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित सह–शिक्षा विद्यालयों की संख्या ज्यादा है तथा बालिका शिक्षा से संबन्धित अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं। पर्वतीय क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर स्त्री–शिक्षा के उन्नयन के लिए सभी माध्यमिक विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था करने की आवश्यकता है।

प्रस्तावना

राश्ट्र के लिए प्राणवन्त जीवन का मूलाधार प्राणवान शिक्षा प्रणाली है, जो समाज तथा राष्ट्र के जीवन को गति देती है एवं समाज तथा राष्ट्र के चरित्र का निर्माण कर देश में लोकतंत्र स्थापित करती है। देश में लोकतंत्र की सफलता के लिये आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक को तदनुकूल शिक्षा मिले। पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं के लिये भी समुचित शिक्षा की व्यवस्था हो। परिवार व समाज के लिए प्रथम शिक्षिका के रूप में एक सुशिक्षित स्त्री नैतिकतावादी तथ्यों को उचित रूप से परिवार व समाज में स्थापित कर सकती है। महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकता को देखते हुये संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्श 1991 को ''बालिका वर्ष'' के रूप में मनाया गया है, परन्तु भारत में आज भी महिलाओं की शिक्षा का पर्याप्त गुणात्मक विकास नहीं हो पाया है। चन्द्रपाल (2005) ने स्पष्ट किया कि वर्तमान में महिला शिक्षा का उन्नयन तथा गुणात्मक विकास कैसे किया जाय यह चिंतन का विषय है।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में कुल 102.87 करोड़ लोगों में जहाँ सम्पूर्ण साक्षरता का प्रतिशत 64.84% था वहीं बालिकाओं के लिये यह साक्षरता मात्र 53.7% थी, जबकि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार एक अरब से भी अधिक जनसंख्या में 74.04% सम्पूर्ण साक्षरता के अन्तर्गत महिलाओं का साक्षरता 65.46% है। महिलाओं को साक्षरता में यह अल्पतम् वृद्धि पर्याप्त नहीं है। किसी भी क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, उसकी सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक जीवन पर प्रभावशील होती है। एक ओर विकसित मैदानी क्षेत्रों में स्त्रियां जर्जर आर्थिकी का दंश भी सह रही हैं तथा कहीं शिक्षा की ऊँचाईयों को भी छू रही हैं किन्तु पर्वतीय क्षेत्र में जहां आधुनिक एवं भौतिक असुविधाओं से स्त्रियां पारम्परिक व पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन में अपना सहयोग देती हैं, वहीं शिक्षा जैसी अमृतम् व्यवस्था के सोपान से वह काफी दूर हैं। सान्याल (1974) के अनुसार भी केवल स्त्री–शिक्षा ही भारत में सामाजिक पुर्नजागरण ला सकती है।

समुचित मार्गदर्शन और शिक्षा से ही मेधा पाटकर, किरन बेदी व राधा भट्ट आदि स्त्रियों से सभी परिचित हैं। गोस्वामी (2003) के अनुसार समाज में आज शिक्षित स्त्री, किसी भी कार्य क्षेत्र में पुरुष से पीछे नहीं है। चिकित्सा, शिक्षण और परिचर्चा के क्षेत्र में स्त्री, पुरुष से अधिक कुशल सिद्ध हुई है।

मानवीय संसाधनों के पूर्ण विकास, परिवार में सुधार, बच्चों के चरित्र निर्माण, देश के उत्थान आदि के लिये यहां बालिकाओं की शिक्षा, बालकों की शिक्षा से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

*विभागाध्यक्ष, बी0एड0 विभाग (स्ववित्त पोषित), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बेरीनाग, (उतराखण्ड)

गढ़वाल मण्डल में स्त्री–शिक्षा

उतराखण्ड राज्य का एक छोटा सा प्रशासनिक स्वरूप अपनी विषम भौगोलिक परिस्थितियों के साथ यहाँ के जन मानस को शिक्षा की ओर ले जाने में निष्ठापूर्वक कार्य कर रहा है। गढ़वाल मण्डल के देहरादून, श्रीनगर, मसूरी, हरिद्वार, एवं कुमाऊँ मण्डल के नैनीताल, हल्द्वानी, अल्मोड़ा आदि शहर शिक्षा के प्रतिष्ठित केन्द्रों के रूप में स्थापित हैं। उतराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल के सात जिलों की शैक्षिक स्थिति का विवरण, तालिका–1 में स्पष्ट किया गया है।

तालिका–1

गढ़वाल मण्डल में जनपदवार जनसंख्या व साक्षरता का विवरण

क्र0 सं0	जिले का नाम	जनसंख्या का विवरण			साक्षरता का प्रतिशत		
		पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	महिला	कुल
1	चमोली	193572	197542	391114	94.18	73.20	85.49
2	रुद्रप्रयाग	111727	125110	236837	94.97	69.98	82.09
3	पौड़ी	326406	310121	636527	95.18	73.26	82.53
4	उत्तरकाशी	168335	161351	329869	89.28	62.23	75.98
5	टिहरी	298804	319605	618409	89.91	61.77	75.10
6	देहरादून	893222	805335	1698557	90.32	79.61	85.21
7	हरिद्वार	1025425	901601	1927029	82.28	65.96	74.62

स्रोत–जनगणना–2011

तालिका–1 के अनुसार गढ़वाल मण्डल के सभी जनपदों में पुरुषों की साक्षरता का प्रतिशत 80% से ऊपर है जबकि महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत, देहरादून में 75% से ऊपर, जनपद चमोली एवं पौड़ी में यह 70% से 74% के मध्य तथा जनपद रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, टिहरी एवं हरिद्वार में यह 70% भी पूरा नहीं है। यद्यपि गढ़वाल मण्डल के सभी जनपदों का कुल साक्षरता प्रतिशत 74% से 86% के मध्य है। उक्त विश्लेशण से स्पष्ट होता है कि गढ़वाल मण्डल में स्त्री–शिक्षा का विकास, पुरूषों की तुलना में काफी कम हुआ है। गढ़वाल मण्डल के दो मैदानी जनपदों में स्त्री–शिक्षा की औसत साक्षरता दर, शेष पर्वतीय भौगोलिक स्थिति वाले जनपदों की स्त्री–शिक्षा की औसत साक्षरता दर से काफी अधिक है। विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण महिलाओं को कहीं साक्षर होना ही कठिन हो जाता है तो कहीं अवसरों की उपलब्धता अधिक प्राप्त हो जाती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज के भारत में शिक्षा समाज व राष्ट्र के लिये संजीवनी है। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख साधन हैं। स्त्री–शिक्षा के अभाव में यह परिवर्तन अधूरा है और स्त्री–शिक्षा की स्थिति का आंकलन कर स्त्री–शिक्षा का विस्तार व विकास सम्भव हो सकता हैं। वर्तमान अध्ययन, उतराखण्ड के पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों की स्त्री–शिक्षा के विकास के संदर्भ में है। गैरोला (1996) के अनुसार उतराखण्ड में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछड़ापन एवं विशमता विद्यमान है। उत्तराखण्ड की महिलायें ही इस पर्वतीय क्षेत्र की अर्थव्यवस्था की मेरुदण्ड हैं परन्तु उनके सामाजिक, आर्थिक दायित्व इतने अधिक और विविध हैं कि उनका समुचित शैक्षिक विकास नहीं हो पाया है। आज भी उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में अनेक महिलायें बुनियादी शिक्षा से वंचित हैं। अतः उतराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल में शिक्षा संस्थानों के पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों की विशम भौगोलिक स्थितियों में होने के कारण स्त्री–शिक्षा के विकास के तुलनात्मक अध्ययन का महत्व है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. गढ़वाल मण्डल के पर्वतीय क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में बालिका शिक्षा के विकास से संबंधित मूलभूत व्यवस्थाओं की स्थिति ज्ञात करना।
2. गढ़वाल मण्डल के मैदानी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में बालिका शिक्षा के विकास से संबंधित मूलभूत व्यवस्थाओं की स्थिति का पता लगाना।
3. गढ़वाल मण्डल के पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में बालिका शिक्षा के विकास से संबंधित मूलभूत व्यवस्थाओं की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

अध्ययन में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है। जनपद चमोली एवं जनपद देहरादून को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लिया गया है। शोध की जनसंख्या के रूप में गढ़वाल मण्डल के पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों के एक–एक जनपदों में जनपद चमोली एवं जनपद देहरादून में अध्ययनरत् बालिकाएं एवं विद्यालयों के प्रधानाध्यापक हैं। पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों के एक–एक जनपदों से दो–दो विकासखण्डों का चयन

लॉटरी विधि से किया गया है। उक्त विकासखण्डों में बालिका शिक्षा से संबंधित माध्यमिक विद्यालयों का चयन पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों के लिए समानुपातिक स्तरीकृत निदर्शन प्रविधि (Proportionate Stratified Sampling Technique) द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में अध्ययन हेतु चयनित विद्यालयों से समस्त अध्ययनरत् बालिकाएं एवं प्रधानाध्यापक हैं। इसके अतिरिक्त बालिका विद्यालयों के आलेख, संबंधित जनपदों के सांख्यिकीय रिकार्ड आदि को भी शोध के द्वितीयक स्रोतों के रूप में सम्मिलित किया गया है। वर्तमान अध्ययन में साक्षात्कार–अनुसूची तथा प्रेक्षण का प्रयोग किया गया है। बालिका विद्यालयों के संख्यात्मक स्थिति का विवरण निम्नलिखित तालिका–2 में दिया गया है।

तालिका–2
अध्ययन की जनसंख्या एवं चयनित न्यादर्शों की संख्या का विवरण

[illegible]		पर्वतीय क्षेत्र			मैदानी क्षेत्र		
		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	25	29	[illegible]	[illegible]	30	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	12	28	03	30	03
	कुल योग			कुल विद्यालय 60			कुल [illegible] 40
[illegible]	सह–शिक्षा विद्यालय	2	16	27	07	10	7
	[illegible]	02	01	03	03	03	03
	[illegible] कुल योग	[illegible]		07	[illegible]		30

उत्तराखण्ड में स्थित ऐसे पहाड़ी स्थान जहाँ की भौगोलिक संरचना पर्वतीय है एवं शहरों से काफी दूर मुख्यतया ग्रामीण पृष्ठभूमि के हैं तथा वर्तमान में ऐसे स्थानों पर भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति आंशिक रूप से संभव हो अथवा पूर्ण रूप से असंभव हो, वर्तमान शोध हेतु पर्वतीय क्षेत्र कहलायेंगे। मैदानी क्षेत्रों से आशय मुख्यतः शहरों से लगे क्षेत्र एवं समतल भौगोलिक संरचना वाले क्षेत्रों से है जहां वर्तमान में भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो जाती है।

उपलब्धियां

गढ़वाल मण्डल के पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों की संख्या, बालिका विद्यालयों की संख्या, शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या, छात्राओं की संख्या के आधार पर शैक्षिक संस्थानों एवं शिक्षकों का संख्यात्मक विवरण, शिक्षक–शिक्षिकाओं की पर्याप्तता का विवरण तथा बालिका शिक्षा से संबन्धित माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाओं की उपलब्धता सम्बन्धी विवरण आदि का विश्लेषण किया गया है। माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाओं की उपलब्धता सम्बन्धी विवरण के अन्तर्गत, फर्नीचर की व्यवस्था, खेल के मैदान, विद्यालयों में शौचालय एवं मूत्रालय की उपलब्धता, छात्रा कॉमन कक्ष की उपलब्धता, पीने के पानी की व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्था, पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था एवं छात्राओं की समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक निर्देशन व परामर्श आदि अध्ययन के आधार हैं।

तालिका (3)
बालिका शिक्षा से संबंधित विद्यालयों की संख्या का विवरण

क्रमांक	विद्यालयों का विवरण	पर्वतीय क्षेत्र		मैदानी क्षेत्र	
		संख्या	प्रतिशत संख्या	संख्या	प्रतिशत संख्या
1.	केवल बालिका विद्यालय	27	90.00%	17	85.00%
2.	सह–शिक्षा विद्यालय	03	10.00%	03	15.00%
	कुल	30	100.00%	20	100.00%

तालिका–3 से स्पष्ट है कि पर्वतीय क्षेत्र में केवल बालिकाओं की शिक्षा हेतु विद्यालयों की संख्या 90% तथा सह–शिक्षा विद्यालयों की संख्या 10% है जबकि मैदानी क्षेत्र में केवल छात्राओं की शिक्षा हेतु विद्यालयों की संख्या 85% तथा सह–शिक्षा विद्यालयों की संख्या 15% है। विश्लेशण से स्पष्ट होता है कि मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित सह–शिक्षा विद्यालयों की संख्या ज्यादा है जबकि केवल बालिका विद्यालयों की संख्या समान है। उनियाल (1996) ने सन् 1947 के बाद गढ़वाल मण्डल के पौड़ी जनपद में स्त्री–शिक्षा की वृद्धि एवं विकास का अध्ययन कर पाया कि स्वतंत्रता के 45 वर्षों बाद भी स्त्री–शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं है।

तालिका (4)
बालिका–शिक्षा से संबंधित विद्यालयों में शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या का विवरण

क्रमांक	विद्यालयों का विवरण	पर्वतीय क्षेत्र		मैदानी क्षेत्र	
		संख्या	प्रतिशत संख्या	संख्या	प्रतिशत संख्या
1.	कुल शिक्षिकाएं	73	67.57%	132	80.49%
2.	कुल शिक्षक	35	32.43%	32	19.51%
	कुल संख्या	108	100.00%	164	100.00%

तालिका–4 के अनुसार पर्वतीय क्षेत्र के माध्यमिक स्कूलों में कुल शिक्षिकाओं की संख्या 67.57% तथा शिक्षकों की संख्या 32.43% है जबकि मैदानी क्षेत्र में उक्त संख्या क्रमशः 80.49% एवं 19.51% है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षिकाओं की संख्या कम है जबकि शिक्षकों की संख्या ज्यादा है।

शाह (2013) के अनुसार मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित सह–शिक्षा विद्यालयों की संख्या ज्यादा है जबकि केवल बालिका विद्यालयों की संख्या काफी कम है। मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षिकाओं की संख्या कम है जबकि शिक्षकों की संख्या अधिक है।

तालिका (5)
छात्रा संख्या के आधार पर विद्यालयों में शिक्षक–शिक्षिकाओं का संख्यात्मक विवरण

क्र.सं.	शिक्षक व शिक्षिकाओं की संख्या	पर्वतीय क्षेत्र		मैदानी क्षेत्र	
		माध्यमिक विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत संख्या	माध्यमिक विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत संख्या
1	पर्याप्त है	07	23.33%	02	90.00%
2	पर्याप्त नहीं है	23	76.67%	01	10.00%
	कुल योग	30	100.00	20	100.00

तालिका–5 के अनुसार, पर्वतीय क्षेत्र के 23.33% माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या पर्याप्त है तथा 76.67% विद्यालयों में उक्त संख्या पर्याप्त नहीं है जबकि मैदानी क्षेत्र के 90.00% माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या पर्याप्त है तथा 10.00% विद्यालयों में यह संख्या पर्याप्त नहीं है। उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि मैदानी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र के अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या पर्याप्त नहीं है जबकि विद्यालयों में उच्च शैक्षिक वातावरण बनाने हेतु शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या पर्याप्त होनी आवश्यक है।

तालिका (6)
छात्रा–संख्या के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों का संख्यात्मक विवरण

क्र.सं.	छात्रा संख्या (इकाई–अन्तराल)	पर्वतीय क्षेत्र		मैदानी क्षेत्र	
		विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत संख्या	विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत संख्या
1	1– 50	20	66.67%	01	5.00%
2	51–100	03	10.00%	05	25.00%
3	101–150	04	13.33%	02	10.00%
4	151 से अधिक	03	10.00%	12	60.00%
	कुल योग	30	100.00	20	100.00

तालिका–6 के अनुसार, पर्वतीय क्षेत्र में 50 तक की छात्रा संख्या वाले 66.67% विद्यालय, 51 से 100 छात्रा संख्या वाले 10.00% विद्यालय, 101 से 150 तक की छात्रा संख्या वाले 13.33% विद्यालय तथा 151 से अधिक छात्रा संख्या वाले विद्यालयों की संख्या 10.00% है जबकि मैदानी क्षेत्र में 1 से 50 तक की छात्रा संख्या वाले विद्यालयों की संख्या 5.00% , 51 से 100 तक की छात्रा संख्या वाले विद्यालयों की संख्या 25.00%, 101 से 150 तक की छात्रा संख्या वाले विद्यालयों की संख्या 10. 00% तथा 151 से अधिक छात्रा संख्या वाले विद्यालयों की संख्या 60.00% है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की संख्या 1 से 50 तक है जबकि मैदानी क्षेत्र के अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की संख्या 151 से अधिक है।

तालिका (7)
बालिका शिक्षा से संबन्धित विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाओं की उपलब्धता सम्बन्धी विवरण

क्र.सं.	विद्यालयों में सुविधाओं की उपलब्धता का विवरण	पर्वतीय क्षेत्र		मैदानी क्षेत्र	
		विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत संख्या	विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत संख्या
1	सुविधाएं हैं	05	16.67%	13	65.00%
2	सुविधाएं कुछ हद तक हैं	10	33.33%	05	25.00%
3	सुविधाएं नहीं हैं	15	50.00%	02	10.00%
	कुल योग	30	100.00	20	100.00

तालिका–7 के अनुसार, पर्वतीय क्षेत्र के 16.67% माध्यमिक विद्यालयों में बालिका शिक्षा के लिए पर्याप्त सुविधाएं हैं, 33.33% माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त

सुविधा व्यवस्था प्रगति पर है तथा माध्यमिक 50.00% विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं जबकि मैदानी क्षेत्र के 65.00% माध्यमिक विद्यालयों में बालिका शिक्षा के लिए पर्याप्त सुविधाएं हैं, 25.00% माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त सुविधा व्यवस्था प्रगति पर है तथा 10.00% माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं। उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबन्धित अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं तथा अधिकांश विद्यालयों में उक्त सुविधा व्यवस्था प्रगति पर है।

निष्कर्ष

1. गढ़वाल मण्डल के मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित सह–शिक्षा विद्यालयों की संख्या ज्यादा है जबकि केवल बालिका विद्यालयों की संख्या समान है।
2. गढ़वाल मण्डल के मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षिकाओं की संख्या कम है जबकि शिक्षकों की संख्या ज्यादा है।
3. गढ़वाल मण्डल के मैदानी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र के अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या पर्याप्त नहीं है जबकि विद्यालयों में उच्च शैक्षिक वातावरण बनाने हेतु शिक्षक–शिक्षिकाओं की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए।
4. गढ़वाल मण्डल के पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबंधित अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की संख्या 1 से 50 तक है जबकि मैदानी क्षेत्र के अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की संख्या 151 से अधिक है।
5. गढ़वाल मण्डल के मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्र में बालिका शिक्षा से संबन्धित अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं तथा अधिकांश विद्यालयों में उक्त सुविधा व्यवस्था प्रगति की जा रही है।

बुधोड़ी (1981) ने गढ़वाल मण्डल में माध्यमिक एवं तकनीकी शिक्षा के विकास का अध्ययन कर पाया कि गढ़वाल मण्डल के सरकारी स्कूलों में भौतिक सुख–सुविधाओं का अभाव है। अतः गढ़वाल मण्डल में पर्वतीय क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा के उन्नयन के लिए बालिका शिक्षा से सम्बन्धित सभी माध्यमिक विद्यालयों में अनिवार्य रूप से शिक्षा अर्जन हेतु आवश्यक एवं मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए आवश्यक है जिससे मैदानी क्षेत्रों की तरह पर्वतीय क्षेत्र में भी बालिकायें सुविधाओं का उपभोग करते हुए अपना सम्पूर्ण ध्यान स्वयं के शैक्षिक विकास पर लगा सकें। मैदानी क्षेत्रों की तरह पर्वतीय क्षेत्रों में शिक्षिकाओं की नियुक्ति एवं बालिका विद्यालयों की संख्या में वृद्धि करके भी पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों की बालिका शिक्षा के विकास में एकरूपता लायी जा सकती है।

सन्दर्भ सूची

चन्द्रपाल (2005). महिला शिक्षा के अनसुलझे पहलू; कुरुक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली वर्ष–54, अंक–41, पृ0 25,

सान्याल, एस0 (1974). एजुकेशन ऑफ गर्ल्स एण्ड वूमेन; वूमेन ऑफ द मार्च, भाग–18, फरवरी, पृ0 13,

गोस्वामी, सुबुद्धि (2003). नारी शिक्षा से जुड़े कुछ सवालः महिला एवं बाल विकास; पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, पृ0–5,

गैरोला, पी0 एन0 (1996). बुनियादी शिक्षाः उत्तराखण्ड की महिलाओं के सन्दर्भ में एक विश्लेशण; महिला जागृति एवं रचनात्मक सम्मेलन, श्रीनगर गढ़वाल, नवम्बर,

उनियाल, रेखा (1996) .सन् 1947 के बाद गढ़वाल मण्डल के पौड़ी जनपद में स्त्री–शिक्षा की वृद्धि एवं विकास का एक अध्ययन; अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, हे0न0ब0ग0वि0वि0, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड,

शाह, बी0सी0, गीता (2013).पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों में स्त्री–शिक्षा के उन्नयन का तुलनात्मक अध्ययन, राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 15, अंक–1, जनवरी–जून 2013, पृ0 24–29ए